ISBN : 978-93-83637-60-7

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

विश्व मैत्री

9 - 10 दिसम्बर 2016

संपादक
डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी

39. भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता

पी. भास्कर राव, हिन्दी विभाग,
जवहर भारती डिग्री कालेज, कावली।

ए. बाबू, प्राध्यापक,हिन्दी विभाग,
वी.आर.कालेज, नेल्लूर।

भूमंडलीकरण के वास्तविक चहरे को अभी भी जनता अंदरूनी रूप से नहीं पहचान पाई। भूमंडलीकरण के पीछे आर्थिक षडयंत्र को लोग समझ सकें इसलिए पूंजीवादी विकसित देशों के सुहावने शब्द और नारे गढे हैं। आज दुनिया में आम जनता कितनी तेजी से जीवन जी रही है, जैसे सूचना तंत्र, चलचित्र, टीवी, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि के कारण आज कोई भी समाचार, सिनेमा, वार्तलाप, दृश्य घटना आदि विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक क्षणों में पहुँचाया जा सकता है। 'कर लो दुनिया मुट्ठी में' अत:आज पूरी दुनिया सिकुडकर एक छोटे गाँव में बदल गयी है। इसलिए आज हम विश्व को ग्लोबल विलेज की संज्ञा देंगे तो वह अनुचित न हो। इतना ही नहीं अब विश्व के किसी कोने में उत्पादित सामग्री को विश्व के हर कोने में पहुँचाने की पहल होनी चाहिए। यही ग्लेवलाइजेशन या भूमंडलीकरण है।

भूमंडलीकरण और उदारीकरण के इस युग ने साहित्य को सीमाओं के पार पहुँचा दिया है। साहित्य का पाठकवर्ग वैसे भी अल्प रहा है लेकिन अब इसके अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगने लगे हैं। भूमंडलीकरण द्वारा इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों का सहारा लेकर राज्य- राष्ट्र की पहचान को ध्वस्त करते हुए, सांस्कृतिक परंपराओं रीति रिवाजों और मिथकों को निष्प्राण बनाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। मनुष्य अपने देश, जाति, धर्म, संस्कृति की अपनी अलग पहचान को छोडकर विश्व ग्राम के विश्व नागरिक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। भूमंडलीकरण के इस महाकाय के सामने आज साहित्य ही मोर्चा संभाला है। इस असंगति के विरोध में साहित्य का मानवतावादी दृष्टिकोण उसे खडा करता है। जब मनुष्य और मनुष्य की इच्छा, स्वप्नों पर सांस्कृतिक वैविध्य पर संकट गहरा रहा हो, साहित्य प्रतिपक्ष की भूमिका निभाकर निरंतर प्रगतिशील बनाता रहा है। साहित्य व्यापक संवेदना रखते हुए हमेशा से समाज के सीमित समुदाय को ही अपनी ओर आकृष्ट करता रहा है, प्रेरणा देता रहा है। अपने विशिष्ट रूप में अपने समय की चुनौती को उठा रहा है।

भूमंडलीकरण की वजह से आर्थिक स्वरूप के अनुभव संसार में वर्गभेद, विषमता, वर्ग संघर्ष, कुटुता, शत्रुता का वातावरण निर्मित कर रहा है। बाजारवाद वैश्वीकरण की नींव है। वह उपभोक्तावाद को प्रोत्साहन और पोषण देता है। भूमंडलीकरण का यह भयावह रूप आम आदमी को दयनीयता ही प्रदान करता है। नतीजा यह आता है कि वह इस सृष्टि के रंगमंच से ओझल हो जाता है। परिस्थिति ही उसे दूसरे विकल्प ढूंढने पर मजबूर करती है।

बदल गया है अर्थतंत्र की हिंसा का शिल्प।
अब वह सीधे बाजार से विस्थापित नहीं किया जाएगा।
सब कुछ बिलकुल प्रजातांत्रिक तरीके से होगा।
महज परास्त कर दिया जायेगा उसका उद्यम।
निरस्त कर दी जाएगी दुकानदारी की उसकी अर्जित कला।
और एक दिन अपने अंधेरे में वह खरीदेगा अलताफ। (मदन केसरी)

निष्कर्ष- भूमंडलीकरण के इस दौर से गुजरती हुई हिन्दी कविता ने भी अपना स्थान बनाया है। पहले बहुत इसके विपक्ष में कहा गया, किंतु आज यही कविताएँ समाज का असली चहरा हमारे सामने लाती है। वैश्वीकरण ने मनुष्य की दशा और दिशा को बदल दिया है, जिसके कारण मानव -मानव से दूर हुआ, भावनाएँ ओझल होने लगीं। सिर्फ मुनाफेवादी दृष्टि ही सामने आयी। कविताओं में प्राँतीय शब्द और अंग्रेजी शब्दों का प्रभाव बडा है। कविता अब छंद व अलंकारों की मेहताज नहीं रही। धीरे - धीरे बदलाव आता गया और भूमंडलीकरण से रची गयी नयी बाजार-नीति सामने आयी। अत: इससे प्रभावित हिन्दी कविता में भी भूमंडलीकरण का दौर चल पडा है।